रात्रि क्लास 23/9/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

आबू प्रदर्शनी का किताब बनाया था, क्योंकि आबू का तीर्थ है सारी दुनिया में मुख्य। सभी धर्मों का तीर्थ आबू समझा जाये। यह एडवरटाइज़ करें तो आबू वाले खुश होंगे। यह दिलवाला मंदिर जैनी धर्म वालों ने बनाया है। समझते नहीं। आदिदेव को मानते हैं। महावीर भी नाम ठीक है। तुम भी माया पर जीत पाने महावीर बनते हो ज्ञान तो कोई में है नहीं। ल0ना0 में भी ज्ञान था नहीं। भक्तिमार्ग में कहते हैं आदि देव का काला पत्थर निकला। वास्तव में काला ते काला तो अभी समझेंगे। जिसमें फिर बाप की प्रवेशता होती है। यह सभी बातें भक्त लोग नहीं जानते हैं। तो आबू ही एडवरटाइज अच्छी कर सकते हैं। आबू की महिमा तो निकलनी ही है। तो आबू दर्शन वाला किताब सभी को दे सकते हो। रखे रहते हैं इससे तो बांट देना चाहिएं आबू में एक है दिलवाला मंदिर आदि देव का है। भक्तिमार्ग में ही बनाया है। अभी तुम बच्चे जानते हो यह है चैतन्य दिलवाला मंदिर। आदिदेव का भी है, गुरु शिखर भी है बहुत ऊँच रहते हैं ना। ऊँच ते ऊँच भगवान गाया जाता है। भगवान के बच्चे आत्माएँ भी साथ रहेंगे। हम सभी ब्राह्मण हैं तो जहाँ बाप रहते हैं हम आत्माएँ भी वहाँ ब्रह्म तत्व में रहती हैं। सभी बातें तुम बच्चों की बुद्धि में है। तुम जानते हो जो जड़ मंदिर है जो भक्तिमार्ग में बनाया है बाकी आदि देव नीचे हैं। ऊपर में आदिनाथ है। तो जरूर कुछ ताल्लुक है। गुरु शिखर का भी ताल्लुक है। बीच में सोने का है उनका भी ताल्लुक है। तुम्हारा भी मंदिर है। तुम्हारे में भी नम्बरवार है। महारथी भल पर ..... निश्चय जैसा होना चाहिए कोई बिरले ही हैं। निश्चय संशय चलता रहता है। माया संशय में ला देती है। नहीं ..... बाप में कब संशय होता है क्या; परन्तु माया ठहरने नहीं देती है। समझते नहीं हमको शिवबाबा पढ़ाते हैं। यर्थात् निश्चय नहीं है। अभी2 निश्चय बुद्धि फिर संशय बुद्धि हो जाते हैं। भूलना थोड़े ही चाहिए; परन्तु माया ऐसी है जो एकदम भुलाये देती है। पत्थर बुद्धि बना देती है। बाप कहते हैं बिल्कुल ही सा0 तन में बहुत जन्मों के अन्त में प्रवेश करता हूँ। निश्चय हो तो फिर भूल क्यों जाये। निश्चय वाले तो चलते–फिरते काम करते इस नशे सदैव हर्षित रहे; परन्तु माया भुला देती है एकदम जैसे मुर्दे बन जाते हैं। एक/दो को अशान्त कर देते हैं। बाप कहते हैं मैं बहुत सा0 तन में आता हूँ। कोई बिरला ही स्थाई रूप से निश्चय बुद्धि हो याद करते हैं। यह आदिदेव जिसमें बाबा प्रवेश करते हैं। वह भी कहते हैं मैं स्थाई याद में रहूँ तो कर्मातीत अवस्था हो जावे फील करता हूँ। हमेशा याद रहे इसके लिए ही पुरुषार्थ करना होता है। बाप भी समझते हैं आस्ते2 पिछ..... में पक्के निश्चय बुद्धि हो जावेंगे। नहीं तो निश्चय में संशय आते रहते हैं। तो आबू का बहुत प्रचार करना चाहिए बड़े ते बड़ा तीर्थ यह है। लिबरेटर गाइड भी यहाँ आते हैं। यहाँ आकर लिबरेशन का काम करते हैं। तुम मंदिर का भी पहचान दे सकते हो। तुम ब्रह्मा के बच्चे तपस्या कर रहे हो। ब्रह्मा के औलाद के ही कोठरियाँ बनी हुई है ना। अभी फिर योगबल से वह कार्य कर रहे हैं। यह किसके औलाद हैं प्रजापिता ब्रह्मा के। बच्चे राजयोग सीख रहे हैं। तो बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। ऊँच ते ऊँच बाप आकर इनमें स्थापना करते हैं। तुम बच्चों की कितनी बड़ी भारी कमाई है। कोई तो कमाई करते2 जाकर गटर में पड़ते हैं। की कमाई चट। कुरूक्षेत्र का समाचार भी बच्चों ने सुना। वह सभी है भक्तिमार्ग। आदिदेव का मंदिर ऊपर में है आदिदेवी का नीचे है। तो जास्ती आदि देवी पर जाते हैं। माँ प्यारी होती है ना। बहुत मेला लगता है। प्राचीन भारत का राजयोग यहाँ दिलवाला में देख सकते हैं। इससे ही पैराडाइज़ स्थापन होता है। सर्व का सद्गतिदाता आबू में ही विराजमान होते हैं। पैराडाइज़ की स्थापना तो आबू में किया ना। ऐसा मंदिर और कहाँ भी है नहीं। परमपिता परमात्मा आबू में प्राचीन योग सिखलाते हैं। अखबार में भी डाल सकते हो। बाप ने पैराडाइज़ कैसे बनाया उसका मंदिर आबू में है। महारथी बड़े मुरली भी नहीं पढ़ते। अपना ही अहंकार रहता है मुरली में प्वाइंट्स तो वही है। महारथी भी कायदे मुजिब मुरली नहीं पढ़ते हैं। यह भी लिखना है ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ ही समझा सकती है। और कोई नहीं। तुम्हारी बुद्धि में तो बैठा है ना। तो म्युजियम आदि में भी यह प्वाइंट्स अच्छी रीति उठानी चाहिए। आबू वाला किताब भी सभी को देते रहो। अभी काम बहुत रहा हुआ है। अच्छा बच्चों को गुडनाइट। और नमस्ते।

रही हुई प्वाइंट्सः–
ओपीनियन यह तो सभी लिखते हैं कि यहाँ बहुत अच्छी शिक्षा दी जाती है, सभी को लेनी चाहिए। बाकी हमको फुर्सत नहीं। औरों को सिर्फ राय देते हैं। खुद कुछ नहीं समझते हैं। बाप कहते हैं ओपीनियन चाहिए खास इन बातों की कि गीता का भगवान कृष्ण नहीं परमपिता परमात्मा शिव है। वही सभी का सदगति दाता है। परमात्मा सर्वव्यापी नहीं है। वह तो बाप है। उनका नाम शिव है। शिवबाबा कहते हैं ना। यह स्लोगन भी बहुत अच्छा है। शिवबाबा याद है? शिवबाबा की स्वर्ग की बादशाही याद है? पतित–पावन भी एक शिवबाबा ही हैं न कि पानी की नदियाँ। ऐसे2 ओपीनियन तुम इकट्ठा करो तो अच्छा एक किताब बनाया जाये; परन्तु ऐसे लिखकर देने वाले अभी नहीं मिलेंगे। जब पिछाड़ी होंगे तब इन बातों आदि का ज्ञान आवेगा। तब ही तुम्हारी विजय होनी है। तब फिर तुम्हारा पीछा पकड़ेंगे। टाइम चाहिए तुम कोशिश करते हो एम0पी0 मिनिस्टर्स आदि को समझाने की; परन्तु ऐसे कोई समझेंगे ही नहीं। बाप है ही गरीब निवाज। तो साधारण गरीब ही आयेंगे। यह भी साधारण थे ना। आजकल जिनके पास लाख हैं उनको साहूकार नहीं कहा जाता है। जिनके पास करोड़ों हैं उनको साहूकार कहा जाता है। वह ज्ञान ले न सकेंगे। यह त्रिमूर्ति का बैज है गीता का सार। इनमें सारा ज्ञान भरा हुआ है। बाकी तो चित्र सभी वर्थ नॉट ए पैनी है। कोई काम के नहीं।

तुम बच्चे समझा सकते हो विश्व में शान्ति किसको कहा जाता है। बोलो अभी स्थापना हो रही है। बाप कहते हैं मनमनाभव। अपन को आत्मा समझ मामएकम् याद करो। तो स्वर्ग के मालिक बन जावेंगे। स्वर्ग का भी यादगार है। स्वर्ग स्थापन करने वाले का भी बना हुआ है। कितनी सहज बात है; परन्तु पत्थर बुद्धि समझते बड़ा मुश्किल हैं। मेहनत लगती है। अभी समझो कोई बहुत अच्छे बड़े को पता लगता है और उनका आवाज़ बहुत अच्छा निकलता है तो भी कह देंगे इनको तो जादू लगा है। जब बहुतों को लगे तब कुछ आवाज़ हो। अभी तो साधारण और गरीब का ही पार्ट है। बाप कहते हैं मैं गरीब निवाज हूँ। गरीबों को आकर साहुकार बनाता हूँ। गरीब ने थोड़ा बीज बोया और गया बैकुण्ठ में। साहुकार लोगों का पैसा क्या काम में आवेगा। बाप कहेंगे मैं तो पक्का सराफ हूँ। रुपया भी काम आवे तब रिटर्न में दूँगा। नहीं तो कहेंगे रख दो। काम में आया तो देंगे भी। नहीं तो नहीं। बाकी स्वर्ग में सबको चलना है यह तो गारन्टी है। उसमें भी जो जैसा कर्म करते हैं। जो बहुतों को मनसा वाचा कर्मणा सुख देते हैं, कर्मणा का भी सुख मिलता है ना। तो उनको बहुत आशीर्वाद मिलती है। कर्मणा भी न करे तो बाकी क्या। नम्बरवार पद तो है ना। बाबा यहाँ का भी पूरा अनुभवी है। किंग क्वीन की शादी होती है तो यहाँ के राजे–रजवारे, प्रिन्स–प्रिन्सेज जाकर उनका पेशगीर उठाते थे। इसमें बहुत इज्जत समझते थे। जब रानी की सवारी निकलती है तो घोड़े पर तलवार उठाकर उनके पिछाड़ी चलते हैं। तो जंगली कहेंगे ना। भारत के पावन महाराजा–महारानी फिर पतित बने हैं तो .... या काम करना पड़ता है। बाबा का सभी देखा हुआ है। तुम कहाँ भी जावेंगे तो झट समझ जावेंगे यह कौन है। हम यह बनने वाले हैं। दिल में खुशी होगी। हम यह बन रहे हैं। तुम्हारी की अभी की यह खुशी ही अविनाशी बन जाती है। मौत सामने आ जाता है तो बहुत तीखी मेहनत करने लग पड़ते हैं। बाकी धन काम में नहीं लग सकेगा पीछे आने वालों का। वह व्यर्थ चला जावेगा। इसलिए बाबा कहते हैं धनवान जो है वह गरीब बनेंगे। और गरीब साहुकार बनेंगे। पीछे समझेंगे हम तो रांग समझ बैठे थे। स्वर्ग तो अजन अभी स्थापन होता है। इतना समय मुफ्त अपन को खुश करते थे। इसलिए कचहरी भी जरूरी है। तो अपना रजिस्टर देखते रहेंगे। देहली में बच्चे म्युजियम आदि बनाते रहते हैं। कितना ओना रहता है सर्विस का। सर्विस में बिज़ी रहते हैं। कोई तो बहुत बिज़ी रहते हैं। बड़ी भारी राजाई स्थापन होती है। बाप कहते हैं एक तो ब्राह्मण कुल की और फिर सूर्यवंशी–चन्द्रवंशी की भी स्थापना करता हूँ। इन्हों की एक ही गीता है। गीता में भगवानुवाच है; परन्तु नाम मनुष्य का डाल दिया है। भक्ति मार्ग में इतने पक्के हो गये हैं। आगे समझते जावेंगे। अच्छा ओम

शिवबाबा याद है?